International Journal of Political Science and Governance 2024; 6(1): 332-336

E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2024; 6(1): 332-336
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 18-02-2024
Accepted: 21-03-2024

भलेन्टिन डुंगडुंग
शोधार्थी, नीति विज्ञान विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची,
झारखण्ड, भारत

Corresponding Author:
भलेन्टिन डुंगडुंग
शोधार्थी, नीति विज्ञान विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची,
झारखण्ड, भारत

कोविड के बाद भारत रूस संबंध

भलेन्टिन डुंगडुंग

DOI: https://doi.org/10.33545/26646021.2024.v6.i1e.342

सारांश
भारत और रूस के संबंध काफी पुराने हैं। अक्टूबर 2000 ई0 में भारत–रूस सामरिक साझेदारी घोषणा पर हस्ताक्षर करने के बाद से भारत–रूस संबंध द्विपक्षीय संबंधों के लगभग सभी क्षेत्रों में सहयोग के बढ़े हुए स्तरों के साथ एक गुणात्मक रूप से नया स्वरूप देखा गया है।
हालांकि पिछले कुछ दशकों में खासकर पोस्ट–कोविड परिदृश्य में संबंधों में भारी गिरावट आई है। इसका सबसे बड़ा कारण रूस के चीन और पाकिस्तान के साथ घनिष्ठ संबंध है जिन्होंने कुछ वर्षों में भारत के लिए कई भू–राजनीतिक मुद्दों का कारण बना दिया।
भारत के प्रधानमंत्री और रूसी संघ के राष्ट्रपति के बीच वार्षिक शिखर सम्मेलन भारत और रूस के बीच रणनीतिक साझेदारी में सर्वोच्च संस्थागत वार्ता होती है।
24 फरवरी 2022 को रूस द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण कर दिया जाता है जिसे रूस ने यूक्रेन का विसैन्यकरण करने के लिए रूस का सैन्य कार्यवाही कहा। रूस के इस हमले से वैश्विक स्थिति में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में भारी दबाव आया है। हालांकि इस दौरान भारत और रूस के संबंधों में और भी प्रगाढ़ता आई है। भारत उन चुनींदा देशों में है जिन्हें रूस के लगभग हर विदेश नीति के दस्तावेज में जगह मिली है।

कूटशब्दः पोस्ट कोविड, रूस, भारत, यूक्रेन–संघर्ष

प्रस्तावना
भारत और रूस संबंध काफी पुराने हैं, भारत का रूख हमेशा से ही सोवियत संघ समर्थक और सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस का समर्थक रहा है। अक्टूबर 2000 ई0 में भारत रूस सामरिक साझेदारी घोषणा पर हस्ताक्षर करने के बाद से भारत–रूस संबंध द्विपक्षीय संबंधों के लगभग सभी क्षेत्रों में सहयोग के बढ़े हुए स्तरों के साथ एक गुणात्मक रूप से नया स्वरूप देखा गया है। हालांकि पिछले कुछ वर्षों में खासकर पोस्ट–कोविड परिदृश्य में संबंधों में भारी गिरावट आई है। इसका सबसे बड़ा कारण रूस के चीन और पाकिस्तान के साथ घनिष्ठ संबंध है। जिन्होंने कुछ वर्षों में भारत के लिए भू–राजनीतिक मुद्दों का कारण बना दिया। भारत के प्रधानमंत्री और रूसी संघ के राष्ट्रपति के बीच वार्षिक शिखर सम्मेलन भारत और रूस के बीच रणनीतिक साझेदारी में सर्वोच्च संस्थागत वार्ता होती है।
जैसे–जैसे कोविड–19 महामारी के प्रभाव से जूझ रही है अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली के दोबारा आकार बदलने से इस ऐतिहासिक मोड़ पर राष्ट्र–राज्यों के सामने अनिश्चितता बढ़ गई है। जबकि अमेरिका–चीन प्रतिद्वंद्विता शायद ही कोई आश्चर्य की बात है। महामारी की तेजी ने इस द्विध्रुवीय गतिविधि को धुरी बना दिया जिसके चारों ओर नई विश्व व्यवस्था बनने की संभावना है। भारत और रूस दोनों ही अपने आप में महत्वपूर्ण खिलाड़ी हैं लेकिन उनमें से कोई भी विश्व व्यवस्था क्रम में शीर्ष दो स्थानों पर जगह नहीं बना पाया है। हालांकि शक्ति संतुलन में चल रहे बदलावों से उनकी विदेश नीति के विकल्प अनिवार्य रूप से प्रभावित होंगे। जिस तरह से अमेरिका और चीन के साथ उनके संबंध विकसित हुए हैं उसका प्रभाव दोनों देशों पर कहीं अधिक होगा।
हालांकि उनका द्विपक्षीय संबंध सक्रिय संघर्ष से मुक्त है लेकिन बाहरी कारकों के नतीजों को अब नजरअंदाज या कम नहीं आंका जा सकता है। इस प्रकार लम्बे समय से चली आ रही विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त साझेदारी पर इन विकासों के प्रभाव की जाँच करना उचित है क्योंकि नई दिल्ली और मॉस्को वैश्विक राजनीति में चल रहे उतार–चढ़ाव के बीच खुद को स्थापित करना चाहता है। चूँकि अमेरिका–चीन प्रतिद्वंद्विता दिन– प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। भारत और रूस बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के समर्थक बने हुए हैं। वे उन बाधाओं को समझते हैं जो द्विध्रुवीयता उनकी विदेश नीति के विकल्पों पर लगेगी। वे विदेश नीति के अनुसरण में स्वतंत्रता पर जोर देते हैं और गठबंधनों से बचते हैं।

हालांकि इसका मतलब यह नहीं कि दोनों पक्ष विश्व व्यवस्था के बारे पूरी तरह से सहमत हैं, जो न तो स्पष्ट है। द्विध्रुवीयता और न ही स्पष्ट बहुध्रुवीयता के साथ प्रवाह में बनी हुई है। इसके परिणामस्वरूप अधिक लचीले रिश्ते बनते हैं क्योंकि हितधारक अपने दाँव लगाते हैं और राष्ट्रीय हितों को संरक्षित करने की कोशिश करते हुए अपनी स्थिति को परिभाषित करना चाहते हैं। यह एशिया से अधिक कहीं और दिखाई नहीं देता है जो चीन की बढ़ती शक्ति का आधार बनता है और जहाँ से वह स्थापित शक्ति को चुनौती देना चाहता है। यह भूगोल भारत और रूस के लिए भी महत्वपूर्ण है। हालांकि अपने सौहार्दपूर्ण द्विपक्षीय जुड़ाव के बावजूद दोनों पक्षों ने इस क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए संघर्ष किया है जो वर्तमान वैश्विक भू–राजनीति का केन्द्र है।

2014 के बाद से चीन रूस के प्रमुख बाहरी साझेदार के रूप में उभरा है, जो अमेरिका के नेतृत्व वाले पश्चिम के साथ उनके निरंतर तनाव के कारण और भी करीब आ गया है। रूस के लिए पश्चिम के साथ संबंधों के टूटने से एशिया–प्रशांत में विविध संबंधों के साथ एक सफल एशिया की धुरी नहीं बन पाई है और एक महत्वपूर्ण शक्ति केन्द्र बनाने में असमर्थ रहा है या यह प्रदर्शित करने में असमर्थ रहा है कि उसके पास खुद को प्रमुख क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए पर्याप्त संसाधन है।

दूसरी ओर तेजी से आक्रामक होते चीन के साथ भारत के संबंधों में लगातार गिरावट देखी जा सकती है। इसने चीन के उत्थान को प्रबंधित करने के लिए अमेरिका को एक अपरिहार्य नीति विकल्प बना दिया है क्योंकि नई दिल्ली के पास बीजिंग के मुकाबले नियम निर्धारक बनने की सीमित क्षमता है। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि रूस–चीन साझेदारी की निकटता उभरती विश्व व्यवस्था और बीजिंग को कैसे संतुलित किया जाए इस पर कुछ वैचारिक मतभेद उभर रहे हैं। यह इन चुनौतियों से निपट रहा है। अमेरिका–चीन प्रतिद्वन्द्विता और भारत और रूस के साथ उनके संबंधित समीकरण जिसके लिए चतुर नेवीगेशन की आवश्यकता होगी और पहले से ही संकेत हैं कि यह जटिल उपक्रम होने जा रहा है। विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त संबंधों के बावजूद विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव की भारत को हिन्द–प्रशांत रणनीतियों को बढ़ावा देकर चीन विरोधी खेमे में शामिल करने की परिचय नीति की संभावना होने की टिप्पणी पर भारतीय विदेश मंत्रालय की ओर से तीखी प्रतिक्रिया आई, जो एक दुर्लभ सार्वजनिक अस्वीकृति थी।

रूसी स्थिति :– हालांकि इस मुद्दे पर रूस की स्थिति अमेरिका के साथ उसकी अपनी असहमतियों से पता चल सकती है कि इसमें हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में क्षेत्रीय खिलाड़ी चिंताओं को छुपाने का खतरा है। जहाँ मॉस्को के पास अपने अभी तक कमजोर संबंधों के कारण सौदेबाजी के लिए सीमित जगह है। भले ही रूस हिन्द–प्रशांत क्षेत्र की अवधारणा का समर्थन नहीं करता है लेकिन जिस सवाल पर उसे विचार करने की जरूरत है वह यह कि क्या भारत जैसे साझेदारों को अलग करने से एक मजबूत यूरेशियन शक्ति बनने की दिशा में उसके प्रयासों में सहायता मिलती है। 21वीं सदी में एक महाशक्ति होने के साथ–साथ इसके प्रभाव के प्रमुख द्वार से जुड़े अहंकार को उभरती विश्व व्यवस्था में चतुराई से काम करने के रास्ते में आने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। भारत और आशियान जैसे हितधारक रूस जैसे स्वतंत्र शक्ति का स्वागत करेंगे यदि वह एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदर्शित कर सके और उसे चीन का कनिष्ठ भागीदार न समझा जाए।

यह देखते हुए कि मॉस्को किसी भी शक्ति के अधीन होने के विचार का विरोधी है, हिन्द–प्रशांत क्षेत्र और उससे आगे मध्य एशिया, पश्चिम एशिया और अफगानिस्तान सहित द्विपक्षीय सहयोग की गुंजाइश बनी हुई है। वास्तव में यूरेशिया और हिन्द–प्रशांत की अवधारणाएँ परस्पर अनन्य नहीं हैं इसके विपरीत वे एक दूसरे के पूरक हैं।

उपर्युक्त चुनौतियों का मतलब यह नहीं है कि भारत और रूस को अपने करीबी रिश्ते को छोड़ देना चाहिए। इसके बिल्कुल विपरीत प्रवाह की यह अवधि दोनों पक्षों के लिए बहुध्रुवीय विदेश नीति को आगे बढ़ाने के लिए अपनी विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी पर भरोसा करने का बिल्कुल सही समय है। दोनों देशों के लिए रिश्ते का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय वह रणनीतिक स्थान है जो वे अमेरिका–चीन और अन्य महान शक्तियों से निपटने के लिए एक–दूसरे को प्रदान करते हैं। भारत–रूस संबंधों में दरार की कीमत क्या होगी? रूस जो पहले से ही पश्चिम के साथ संबंधों के टूटने स जूझ रहा है। उसके पास रणनीतिक साझेदार के रूप में चीन के अलावा कोई अन्य बड़ी शक्ति नहीं बचेगी। इसका मतलब यूरेशिया में रूस के लिए भू–राजनीतिक संतुलन के लिए खतरा होगा जो उसकी कमजोरियों को देखते हुए एक गंभीर संभावना है। भारत के लिए रूस–चीन गठबंधन चीन के प्रमुख वाले एशिया की भयावह संभावना लाएगा। इस परिदृश्य में भारत पश्चिम के साथ समान संबंध पर विचार करने के लिए मजबूर महसूस करेगा। इसमें हमेशा समान हित न होने के बावजूद विभिन्न दलों के साथ जुड़ने की अपनी वर्तमान इच्छा से दूर जाना होगा जो बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की उसकी खोज पर नकारात्मक प्रभाव डालेगा जहाँ वह रणनीतिक स्वायतता बनाए रखता है।

ऐसे परिदृश्य को रोकने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम द्विपक्षीय भारत–रूस एजेंडे को पुनर्जीवित करना होगा। इस संबंध में पिछले साल रूस द्वारा सीमा पर झड़पों के दौरान भारत और चीन को बातचीत की मेज पर लाने के लिए किए गए शांति कूटनीतिक प्रयास जैसे कार्रवाई विश्वास निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है और मतभेदों को सार्वजनिक रूप से उजागर करने की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी है। आर्थिक एजेंडे को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जो वर्तमान में रक्षा और ऊर्जा क्षेत्रों में सहयोग पर बहुत अधिक निर्भर है। हालांकि ये दोनों क्षेत्र संबंधों का आधार बने रहेंगे, लेकिन अधिक व्यापक आधारित आर्थिक जुड़ाव की तत्काल आवश्यकता है।

एक दूरदर्शी आर्थिक एजेंडे में दोनों देशों की ताकत का दोहन करने के लिए हाई–टेक क्षेत्र, जैव–प्रौद्योगिकी, नैनो प्रौद्योगिकी, एआई, अंतरिक्ष, स्टार्ट–अप और नवाचार, फर्मास्यूटिकल्स, स्वास्थ्य सेवा आदि में सहयोग शामिल होना चाहिए। एस एम ई को द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना भी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। इसके अलावा, रूसी सुदूर पूर्व और आर्कटिक में द्विपक्षीय और बहुपक्षीय दोनों प्रारूपों में सहयोग को आगे बढ़ाना फायदेमंद होगा। वास्तव में बहुपक्षीय संबंध भारत और रूस के लिए निरंतर जुड़ाव का क्षेत्र रहा है। जहाँ रूस से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट और परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह में प्रवेश जैसे मुद्दों पर पूर्व में ही समर्थन किया है निरंतर सहयोग की इच्छा ब्रिक्स, संघाई सहयोग संगठन और यूरेशियन आर्थिक संघ सहित प्रारूपों में भी दिखाई देती है। यहाँ तक कि अंतर्राष्ट्रीय उत्तर–दक्षिण परिवहन गलियारे की परिकल्पना एक बहुपक्षीय उपक्रम के रूप में की गई है। इस कनेक्टीविटी परियोजना में आर्थिक और भू–राजनीतिक तर्क जुड़े हुए हैं। इसी तरह का तर्क प्रस्तावित चेन्नाई–ब्लादिवोस्तक समुद्री गलियारे का भी मार्गदर्शन करता है। जहाँ रूसी सुदूर पूर्व से व्यापार संबंधों में सुधार के अलावा, भारतीय पक्ष को उम्मीद है कि यह लिंक यूरेशियन संघ और खुले, मुक्त और समावेशी हिन्द–प्रशांत क्षेत्र के बीच एक पुल के रूप में भी काम करेगा। अफगानिस्तान पर भारत, ईरान और रूस के बीच सहयोग को पुनर्जीवित करने पर चर्चा करना भी उपयोगी हो सकती है। अल्पावधि में न तो भारत–चीन संबंधों और न ही

अमेरिका– रूस संबंधों में सुधार की उम्मीद है और अमेरिका और चीन क्रमशः नई दिल्ली और मॉस्को के लिए प्रमुख भागीदार बने रहेंगे। ऐसे में सभी मुद्दों पर स्वतंत्र और स्पष्ट चर्चा को तेज करना और साथ ही द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए कदम उठाए एक–दूसरे के लिए मुख्य चिंता के मुद्दों पर तटस्थता बनाए रखने का संकल्प लेना समझदारी होगी। इससे यह सुनिश्चित होना चाहिए कि बदलती दुनिया में अनिश्चितता के समय में भारत और रूस का अन्य शक्तियों के साथ जुड़ाव उनकी द्विपक्षीय साझेदारी की कीमत पर न हो आनेवाले वर्षों में दोनों पक्षों को अपनी राजनीतिक, आर्थिक, रक्षा और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए जगह देते हुए बेहतर संबंध रखे जा सकते हैं।

हालांकि रूस–यूक्रेन संघर्ष में भारत और रूस के संबंधों में कई उतार–चढ़ाव देखने मिलते हैं। अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों व संकटों के प्रति भारत की प्रतिक्रिया में स्वतंत्रता के समय से ही कोई बड़ा बदलाव नहीं आया है। भारत का रूख हमेशा से सोवियत संघ समर्थक और सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस समर्थक रहा। यूक्रेन पर रूस के आक्रमण पर भारत की प्रतिक्रिया जहाँ उसने किसी पक्ष की बिना भला–बुरा कहे नागरिकों की हत्या की निंदा की और संयुक्त राष्ट्र मतदान से अनुपस्थित रहा। इसी ऐतिहासिक रूप से सतर्क तटस्थता की नीति से मौलिक रूप से अलग नहीं है। भारत अमेरिका द्वारा प्रायोजित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के उस प्रस्ताव से भी दूर रहा जिसमें यूक्रेन के विरुद्ध रूस की आवश्यकता की कड़ी निंदा की गई थी। भारत यूक्रेन में रूस की सैन्य कार्रवाई की निंदा करनेवाले संयुक्त राष्ट्र महासभा के संकल्प से भी अलग रहा। भारत अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) के प्रस्ताव से भी अलग रहा जो यूक्रेन में चार परमाणु ऊर्जा स्टेशनों और चेर्नोबिल सहित विभिन्न परमाणु अपशिष्ट स्थलों की सुरक्षा से संबंधित था। हालांकि यूक्रेन संकट पर भारत का रूख विश्व के लिए कोई एकाकी रूख नहीं है। एक प्रमुख लोकतंत्र दक्षिण अफ्रीका भी रूस की निंदा करनेवाले संयुक्त राष्ट्र मतदान से अलग रहा। संयुक्त अरब अमीरात भी संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में इस मामले पर आहूत मतदान से अलग रहा जो खाड़ी क्षेत्र अमेरिका का निकट सहयोगी है और हजारों अमेरिकी सैनिकों की मेजबानी करता है, पश्चिमी एशिया में अमेरिका के सबसे घनिष्ठ सहयोगी इजराइल ने रूसी हमले की निंदा तो की लेकिन प्रतिबंध व्यवस्था में शामिल होने से इन्कार कर दिया और यूक्रेन को अपनी रक्षा प्रणाली भेजने से भी मना कर दिया। उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के सदस्य तुर्की ने भी ऐसा ही किया और यूक्रेन एवं रूस के बीच मध्यस्थता के लिए आगे बढ़ा। लेकिन इसमें से कोई भी देश पश्चिम देश उस तरह के दबाव और सार्वजनिक आलोचना के दायरे में नहीं आया जैसा भारत के साथ हुआ। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने भी भारत की स्थिति को कुछ हद तक अस्थिर बताया। बाइडेन प्रशासन के उपराष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने अमेरिकी प्रतिबंधों को दरकिनार करते हुए रूस के साथ व्यापार करने की स्थिति में भारत को परिणाम भुगतने की चेतावनी दी।

हालांकि पश्चिमी देशों द्वारा भारत को चुनींदा रूप से लक्षित क्यों किया जा रहा है इसके तीन व्यापक कारण हो सकते हैं :–

1. **राजनीतिक दृष्टि से :** पश्चिम से सावधानीपर्वूक इस आख्यान के निर्माण की कोशिश की है कि यूक्रेन पर रूसी राष्ट्रपति ब्लामिदीर पुतिन का हमला 'फ्री वर्ल्ड' पर हमला है। यदि दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत रूसियों को दंडित करने के लिए पश्चिमी नेतृत्व वाले इस दाँव से बाहर रहता है तो उनका यह आख्यान कमजोर नजर आएगा।
2. **आर्थिक दृष्टिकोण से :** रूस पर प्रतिबंध मुख्यतः पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए हैं। केवल तीन एशियाई देश जापान, दक्षिण कोरिया और सिंगापुर ने ही इसका समर्थन किया है। विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था चीन ने अमेरिकी प्रतिबंधों का पालन नहीं किया गया। यदि भारत की भुगतान प्रतिबंधों के संबंध में कोई रास्ता निकालकर रूस के साथ व्यापार करना जारी रखता है तो यह निश्चित रूप से रूसी अर्थ व्यवस्था पर प्रतिबंधों के प्रभाव को मंद कर दिया है।
3. **रणनीतिक रूप से :** यह शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद से सबसे महत्वपूर्ण वैश्विक संकट है। भारत ने पिछले 30 वर्षों में अमेरिका के साथ और सामान्य रूप से पश्चिम के साथ अपनी अपनी रणनीतिक साझेदारी में प्रगति की है, जबकि रूस के साथ भी उसका मधुर संबंध बना रहा है। अमेरिका के साथ भारत के संबंधों में रूपांतरण के साथ जहाँ अमेरिका भारत के हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में चीन के लिए एक संतुलनकारी शक्ति के रूप में भी देखता है और उम्मीद थी कि भारत अपनी रणनीतिक स्वायतता छोड़ देगा और पश्चिम के साथ संरेखित रूख अपनाएगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

यूक्रेन की संकट के पीछे पश्चिम की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि यूक्रेन संकट में पश्चिम एक निर्दोष दर्शक भर नहीं है। वर्ष 2008 में यूक्रेन को नाटो की सदस्यता का वादा किया था जो उसे नहीं मिली। लेकिन यह वादा भर रूस के सुरक्षा समीकरण को आशंकित कर देने के लिए पर्याप्त था और वह आक्रामक रूप से आगे बढ़ा। उसने क्रीमिया पर कब्जा कर लिया और डोनबास में उग्रवाद को समर्थन देने लगा। अमेरिका ने यूक्रेन को धन और सीमित मात्रा में हथियार देना तो जारी रखा लेकिन रूस के विरुद्ध यूक्रेन के प्रतिरोध को सशक्त कर सकने के लिए कोई सार्थक कदम नहीं उठाया। इस प्रकार पश्चिम न केवल रूस को रोकने में विफल रहा बल्कि युद्ध के प्रति उसकी सीमित प्रतिक्रियाएँ रूस को चीन से बेहतन संबंध बनाने की ओर प्रेरित कर रही है। भारत के पास दो ही विकल्प थे, वह रूसी विरोधी पश्चिमी दृष्टिकोण का अनुसरण करते हुए चीन से रूस की निकटता की गति को और बढ़ा देता अथवा मॉस्को के साथ संलग्नता की अपनी शर्तों को बनाए रखते हुए रूस को अपने एशियाई संबंधों में विविधता लाने का अवसर देता। निश्चय ही फिर भारत ने दूसरा विकल्प चुनना उपयुक्त समझा।

भविष्य के लिए भारत को कतिपय महत्वपूर्ण कदम उठाना राष्ट्रीय हित में होगा।

1. **हथियारों के मामले में आत्मनिर्भरता :–** चीनी विस्तारवाद, सीमाओं पर दुस्साहसिक चुनौती और अफगानिस्तान से अमेरिकी सैन्य बल की अचानक वापसी के परिदृश्य में भारत को एशिया में चीन के रणनीतिक एवं भू–आर्थिक खतरे से निपटने के लिए अमेरिका और रूस दोनों की ही आवश्यकता है। हालांकि यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि जब भी प्रमुख शक्तियों के बीच संघर्ष होता है तो उन्हें अपनी लड़ाई अकेले ही लड़नी होती है। इसलिए आत्मनिर्भरता बेहद महत्वपूर्ण है। भारत जब हथियारों के मामले में वास्तविक आत्मनिर्भरता प्राप्त करेगा तभी वह दुनिया का बेहतर तरीके से सामना करने में सक्षम होगा।
2. **संतुलित दृष्टिकोण :–** यदि एशिया में स्थल क्षेत्र पर भारत–रूस साझेदारी महत्वपूर्ण है तो हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में चीनी समुद्री विस्तारवाद का मुकाबला करने के लिए 'क्वाड' महत्वपूर्ण है। चीन का मुकाबला कर सकने की अनिवार्यता भारतीय विदेश नीति की आधारशिला बनी हुई है और यूक्रेन में रूसी कार्रवाई पर दिल्ली के रूख से लेकर हर बात तक भारत की स्थिति इसी अनिवार्यता से प्रेरित है।
3. **भारत में पश्चिम के हितों को समझना :** भारत की विदेश नीति के भीतर की बात की बहस चल रही है कि भारत अपनी तटस्थता से किस लाभ–हानि की स्थिति में रहेगा और पश्चिमी देशों का साथ देने पर क्या परिणाम सामने आ सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह सोच भी मौजूद है कि पश्चिमी देश इस समय भारत से अलग होने का जोखिम

नहीं उठा सकते क्योंकि उन्हें भारत के बाजारों की और एक लोकतंत्र के रूप में भारत की स्थिति की जरूरी है क्योंकि वह चीन को नियंत्रित करने के लिए भागीदारों की तलाश कर रहा है।

यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के बाद से दुनिया भर में काफी उठापटक है। चीन और रूस की दोस्ती बढ़ी है जबकि भारत का भी रूस से द्विपक्षीय व्यापार बढ़ा है। कभी भारत रूस का द्विपक्षीय व्यापार 10 अरब डॉलर का भी नहीं रहता था लेकिन यूक्रेन पर हमले के बाद से दोनों देशों का द्विपक्षीय व्यापार 40 अरब डॉलर पार हो गया है। हालांकि यह बढ़ा आँकड़ा भारत का रूस से बढ़े तेल आयात के कारण है। बहस यह भी है कि भारत अब रूस से दूर और अमेरिका के करीब जा रहा है लेकिन भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ऐसा नहीं मानते हैं। जयशंकर कहते हैं कि दुनिया कई तरह की चुनौतियों से जूझ रही है, इसके बावजूद भारत और रूस के संबंध स्थिर हैं। तमाम चुनौतियों के बावजूद रूस के साथ हमारा संबंध अडिग है, रूस से संबंधों की अहमियत को लेकर हमारा वर्षों का मूल्यांकन है। रूस से भारत की दोस्ती को केवल रक्षा निर्भरता के आइने में देखना एक गलती है, हमारे संबंध इससे कहीं आगे के हैं। रूस के साथ संबंधों को लेकर हमारा अपना भू–राजनीतिक तर्क है। दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग भी बढ़ रहा है।

भारत रूस व्यापार वार्ता 2023 में भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने घोषणा की कि भारत और रूस ने 2025 के लक्ष्य को पहले ही अपने द्विपक्षीय व्यापार लक्ष्य 30 बिलियन डॉलर को पार कर लिया है।

रूस के पास अरबों भारतीय रूपये हैं जिनका वह उपयोग नहीं कर सकता। विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव। सर्गेई लावरोव ने शंघाई सहयोग संगठन की बैठक के मौके पर भारत के पश्चिम राज्य गोवा में संवाददाताओं से कहा, यह एक समस्या है। हमें इस पैसे का उपयोग करने की जरूरत है। लेकिन इसके लिए इन रूपयों को दूसरी करेंसी में ट्रान्सफर करना होगा।

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार 2022–2023 वित्तीय वर्ष के पहले 11 महीनों में रूस को भारत का कुल निर्यात 11.6ः घटकर 2.8 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि आयात लगभग पाँच गुणा बढ़कर 41.56 बिलियन डॉलर हो गया। यह उछाल तब आया जब भारतीय रिफाइनरों ने पिछले साल यूक्रेन में राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन के आक्रमण के जवाब में पश्चिमी देशों द्वारा रियायती दर पर रूसी तेल लेने से इन्कार कर दिया था।

रूस–यूक्रेन में शांति के लिए पहली बार 30 देशों की बैठक सऊदी अरब में 5–6 अगस्त को वार्ता हुई इसमें भारत को भी न्योता दिया गया। 13 महीनों से ज्यादा समय से चल रही यूक्रेन युद्ध में शांति की पहल के लिए पहली बार दुनिया के 30 बड़े देश एक साथ आ रहे हैं। मकसद है यूक्रेन पर रूस के बातचीत को शुरू हो सके। सऊदी अरब की मेजबानी में यह वार्ता 5–6 अगस्त को जेद्दा शहर में हुई। इसमें भारत अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोपीय यूनियन के देशों के अलावा जापान, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, पोलैंड, इंडोनेशिया, मिश्र, मेक्सिको, चिली और जाम्बिया जैसे कई देश शामिल हुए।

रूस को बैठक से दूर रखा गया। यूक्रेन और पश्चिमी देशों को उम्मीद है कि दुनिया भर के देशों को बुलाने से शांति वार्ता के लिए यूक्रेन को समर्थन मिल सके। यूक्रेन के छठे हिस्से पर कब्जा होने के बाद रूस का कहना है कि शांति तभी हो सकती है जब कीव आज की स्थिति को स्वीकार कर ले। उधर यूक्रेन ने 10 माँगें रखी हैं जिसमें यूक्रेन की खेत्रीय अखण्डता सुनिश्चित करने, रूसी सेना को हटाने, बंदियों को रिहा करने, आक्रमण के आरोपियों पर केस चलाने और यूक्रेन को सुरक्षा गारंटी देना शामिल है। इससे पहले मई 2023 में यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की ने अरब लीग बैठक में भाग लिया था। इधर सऊदी अरब अपनी स्थिति को मजबूत करते हुए यूक्रेन के 300 बंदी रिहा कराए थे। यूक्रेन पर शांति वार्ता की पहल करके सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान का रुतबा बढ़ रहा है। फरवरी 2023 में सऊदी अरब के विदेश मंत्री प्रिंस फैसल बिन फरहान ने कीव का दौरा किया और 3,290 करोड़ रु0 की वित्तीय सहायता दी थी। सितम्बर 2022 में सऊदी अरब के हस्तक्षेप के बाद ही रूस ने यूक्रेन के 300 से ज्यादा युद्धबंदियों को रिहा किया था। यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के बाद वैश्विक राजनीति में कई परिवर्तन आए हैं। रूस के खिलाफ पश्चिम एकजुट और ज्यादा मजबूत हुआ है। 200 साल, 2 विश्वयुद्ध में तटस्थ रहनेवाला स्वीडन यूक्रेन हमले से नाटो में शामिल हो गया। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन की मध्यस्थता से आखिरकार तुर्किये ने नाटो में स्वीडन के शामिल होने का रास्ता साफ कर दिया। यूक्रेन पर रूस के हमले के 16 महीनों बाद नाटो का विस्तार बड़ी सफलता है। एक साल में नाटो के 2 नॉर्डिक देशों फिनलैण्ड और स्वीडन की सदस्यता से उसे उत्तरी यूरोप में रूस के खिलाफ नया रक्षा कवच मिलेगा। मार्च 2022 में यूक्रेन में रूस के हमले के बाद स्वीडन और फिनलैण्ड दोनों अपनी बरसों पुरानी तटस्थता की नीति छोड़कर अप्रैल 2022 में नाटो की सदस्यता के लिए आवेदन किया था। फिनलैण्ड नाटो में 31वाँ सदस्य बन गया लेकिन नाटो के मौजूदा सदस्यों तुर्किये और हंगरी के विरोध के चलते स्वीडन की सदस्यता अटक गई थी। अब वह नाटो का 32वाँ साथी बनने जा रहा है। स्वीडन के इस फैसले से न सिर्फ नाटो की ताकत बढ़ेगी, बल्कि रूस को रोकने में मदद मिलेगी। फिनलैण्ड के बाद स्वीडन के नाटो में आने से यूरोप को उत्तर में रूस के खिलाफ मजबूत सेफ्टी वॉल मिलेगी। लिथुआनिया में नाटो की बैठक से पहले एर्दोगन ने कई शर्तें रख दी थीं, लेकिन जो बाइडन भरोसा दिलाकर उन्हें राजी कर लिया। अर्दोगन की प्रमुख माँगें हैंः–

- एफ–16 जेट डील को मंजूरी मिले
- तुर्किये को ईयू की सदस्यता मिले।
- स्वीडन तुर्किये विरोधियों पर एक्शन ले।

इस पर अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन का जवाब था कि

- एफ–16 डील पर वे खुद नजर रखेंगे।
- अमेरिका ईयू से इसकी बात करेगा।
- स्वीडन तुर्किये की मुद्दों पर सख्त कार्रवाई करेगा।

इसके बाद एर्दोगन ने स्वीडन के नाटो में शामिल होने की मंजूरी दे दी है हालांकि अभी तक नाटो का औपचारिक सदस्य नहीं बन पाया है।

रूसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन के ब्रिक्स सम्मेलन में अगले महीने दक्षिण अफ्रीका न जाने के फैसले के बाद उनका भारत आना भी संदिग्ध हो गया है। पुतिन को सितम्बर 2023 में जी 20 सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए भारत आना है। दक्षिण अफ्रीका के एक शीर्ष राजनयिक का कहना है कि पुतिन ब्रिक्स सम्मेलन को खतरे में नहीं डालना चाहते हैं, इसलिए नहीं आ रहे हैं। चूँकि पुतिन के खिलाफ इंटरनेशनल क्रिमिनल कोर्ट में वारंट जारी किया गया है, इसलिए अगर वे दक्षिण अफ्रीका जाते हैं तो वहाँ उनकी गिरफ्तारी हो सकती है। दक्षिण अफ्रीका इंटरनेशनल क्रिमिनल कोर्ट का सदस्य है, इसलिए उसे पुतिन की गिरफ्तारी के कदम उठाने पड़ सकते हैं। दक्षिण अफ्रीका के लिए यह एक बड़ी कूटनीतिक और कानूनी दुविधा हो सकती है।

लेकिन 19 जुलाई को जब दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा के दफ्तर ने यह साफ कर दिया कि पुतिन जोहान्सबर्ग नहीं आ रहे हैं तो उनके भारत न आने को लेकर चर्चा और तेज हो गई है। पुतिन के जी 20 सम्मेलन में नई दिल्ली न आने की आशंका तभी से जताई जा रही थी जब

जुलाई 2023 के शुरुआत में भारत ने एस सी ओ की बैठक वर्चुअली की थी। कहा गया कि पुतिन ने भारत न आने के फैसले के बाद इस सम्मेलन को वर्चुअली करने का फैसला किया गया।

पुतिन पर क्या है आरोप

आई सी सी ने 17 मार्च 2023 को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चिल्ड्रेन राइटस के लिए रूस की कमिश्नर मारिया लवोवा–बेलोवा के खिलाफ गिरफ्तारी का वारंट जारी किया है। आई सी सी ने फरवरी 2022 में यूक्रेन पर रूस का हमला होने के बाद यूक्रेन से बच्चों के आपराधिक डिपोर्टेशन के मामले में दोनों पर निजी तौर पर जिम्मेदार होने का आरोप लगाया है। आई सी सी ने पुतिन पर इसे रोकने के लिए राष्ट्रपति के तौर पर अपने अधिकारों का इस्तेमाल न करने का आरोप लगाया है और कहा कि उनके खिलाफ मामला चलाने के लिए पर्याप्त सबूत है।

निष्कर्ष

24 फरवरी 2022 को रूस द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण कर दिया जाता है जिसे रूस ने यूक्रेन का विसैन्यकरण करने के लिए रूस का सैन्य कार्यवाही कहा। रूस के इस हमले से वैश्विक स्थिति में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में भारी दबाव आया है। हालांकि इस दौरान भारत और रूस के संबंधों में और भी प्रगाढ़ता आई है। भारत उन चुनींदा देशों में है जिन्हें रूस के लगभग हर विदेश नीति दस्तावेज में जगह मिली है। हालांकि इस बार भारत को पहले के मुकाबले अधिक महत्व दिया गया है। दोनों देशों के बीच बढ़ रहा कारोबार भी एक बहुत बड़ा कारण है जिसकी वजह से भारत रूस के लिए भी महत्वपूर्ण हो गया है। भारत भी रूस के साथ अपने संबंधों को बेहतर बनाए रखना चाहता है। इसमें भारत को अपने लिए कई तरह से लाभ दिख रहा है।

ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य तेलों की आपूर्ति, उर्वरक की आपूर्ति, इन सबमें पिछले एक साल में चार से पाँच गुना इजाफा हुआ है। दुनिया की दो–तिहाई खनिज सम्पदा रूस के पास है। रूस तेल का बड़ा उत्पादक है और भारत को सस्ते दर पर तेल दे रहा है। भारत का रूस के साथ रहना उसके अपने सामरिक और रणनीतिक हितों में है। अमेरिका भारत को रूस के साथ रक्षा उपकरण के व्यापार के लिए भारत को प्रतिबंध से राहत देता है। अमेरिका भारत को CAATSA एक्ट के तहत रूस के साथ कारोबार करने पर छूट देता है किन्तु इसका मुख्य कारण है चीन। क्योंकि अमेरिका की चिंता चीन है और चीन से निपटने के लिए अमेरिका को एक मजबूत भारत की आवश्यकता है। कोविड के बाद विश्व राजनीति कई मायने में उथल–पुथल रही है। वैश्विक आपूर्ति प्रणाली कोविड महामारी और लॉकडाउन के कारण प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। खाद्य पदार्थों की कीमतों में इजाफा के कारण जनजीवन प्रभावित हुआ। इसी क्रम में दुनिया कोविड–19 महामारी से निकल रहा था कि रूस द्वारा यूक्रेन पर हमला से यूरोप युद्ध की चपेट में आ गया और वैश्वीकरण के दौर में इस युद्ध का प्रभाव यूरोप जैसे तथाकथित सम्पन्न देशों से लेकर एशिया, लैटिन अमेरिकी देश और अफ्रीकी देशों में निर्धनता और भूख की विकट परिस्थिति आई। किन्तु भारत पर इसका प्रभाव विशेषकर रूस–यूक्रेन युद्ध का प्रभाव ऊर्जा आपूर्ति की दृष्टिकोण से भारत अपने परिस्थितियों के अनुकूल वैश्विक राजनीति को साधने में सफल रहा है। यूरोप और अमेरीकी दबाव के बावजूद हालांकि रूस–यूक्रेन संघर्ष के दीर्घकालिक निहितार्थ अभी सामने आने शेष हैं।

संदर्भ

1. https://www.orfonline.org
2. https://www.dristiias.com 13/06/2023
3. www.bbc.com 8/5/023
4. www.bbc.com 25/07/2023 **अंशुल सिंह**
5. Hindustan Times
6. The Hindu 08/04/2022
7. दैनिक भास्कर, राँची, 13/07/2023 पृष्ठ सं0 11
8. दैनिक भास्कर, राँची, 07/08/2023 पृष्ठ सं0 11
9. https://www.mea.gov.in
10. wwwbbc.com 21 **जुलाई** 2023
11. wwwbbc.com 31 **मार्च** 2023] **रॉबर्ट प्लमर**